अभिनव क़दम

अंक 15

वर्ष : १० अंक : १५ जून २००६ – नवम्बर २००६

अभिनव क़दम

१५

- कथाकार कमलेश्वर, समालोचक सत्यप्रकाश मिश्र को अभिनव कदम की श्रद्धांजलि।
- श्रद्धांजलि छाही गाँव (सारनाथ–बनारस) के छोटू यादव व उन तमाम किसानों को जिन्हें समय ने आत्महत्या के लिये मजबूर किया।
- प्रतिरोध की बुनियाद पर खड़े नन्दीग्राम (प.बंगाल) में मारे गये किसानों को श्रद्धांजलि।
- श्रद्धांजलि सद्दाम हुसैन को जिन्हें साम्राज्यवादियों ने शूली पर लटकाया।
- श्री रामानन्द सरस्वती पुस्तकालय, जोकहरा–आजमगढ़ के प्रेरणास्रोत स्व. रामानन्द राय (जज साहब) को अभिनव कदम की श्रद्धांजलि।

संस्थापक–संरक्षक : अब्दुल बिस्मिल्लाह, उत्तमचन्द

जनसंस्कृति के पक्ष में आयोजन

वर्ष : १० अंक : १५

जून २००६ – नवम्बर २००६

अभिनव क़दम

प्रधान संपादक : चन्द्रदेव राय

संपादक : जयप्रकाश धूमकेतु

संपादन सहयोग : शिवकुमार पराग
संजय श्रीवास्तव

आवरण : राजीव गुप्ता

प्रसार व्यवस्था : श्रीमती राजेश्वरी

–: संपर्क :–

२२३, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा
मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.) २७५१०१
फोन : ०५४७-२२२३११३, मोबाइल : ९४१५२४६७५५

यह अंक	५०/–
संस्थाओं के लिये	१००/–
आजीवन सदस्यता :	२०००/–

प्रकाशक · साहित्यिक–सांस्कृतिक संस्था 'मंथन' मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)
कम्पोजिंग : ऋतिक कम्प्यूटर प्रिन्टर्स, मऊ, मो.–९४१५२४६०१६
प्रिंन्टिग · प्रभात प्रिन्टिंग प्रेस, रामबाग, इलाहाबाद (उ.प्र.)

संपादन / संचालन / अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव क़दम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव क़दम में प्रकाशित रचनाओं की रीति–नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

रचना क्रम

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
१.	संपादकीय		७
२.	नायक : रामप्रकाश कुशवाह की लम्बी कविता		१३
३.	राधेलाल विजधावने की चार कविताएँ		१६
४.	सुभाष राय की दस कविताएँ		२५
	लेख		
५.	डा. रशीद जहाँ के नाटक : जीवन में निर्भिक हस्तक्षेप का रंग कर्म	शकील सिद्दीकी	४१
६.	डा. रशीद जहाँ : स्त्री यथार्थ के बेबाक चित्रण की साहसी कथाकार	शकील सिद्दीकी	५०
७.	सभ्यताओं के संघर्ष के बीच ओरहान पामुक को साहित्य का नोबेल पुरस्कार	कृष्ण कुमार यादव	५४
८.	प्राच्यवाद का संकट	एडवर्ड डब्ल्यू सईद अनुवाद : रामकीर्ति शुक्ल	५६
९.	इतिहास, साहित्य और भूगोल	एडवर्ड डब्ल्यू सईद अनुवाद : रामकीर्ति शुक्ल	७७
१०.	मेरा लेखन अन्तर्कथा	वी. एस. नायपाल अनुवाद : रामकीर्ति शुक्ल	९६
११.	नकेनवाद बनाम नई कविता	रामनिहाल गुंजन	१२१
११.	पं. बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र व्यक्तित्व की अंतरंग छबियाँ	मधुरेश	१२६
१२.	डॉ. रामविलास शर्मा का अन्तः अनुशासनीय साहित्येतर चिन्तन	डॉ. वीरेन्द्र सिंह	१३३
१३.	नागार्जुन की कविता में जीवन राग	डॉ. वीरेन्द्र मोहन	१४२
	कहानियाँ		
१४.	बूड़ा बंश कबीर का	बादशाह जुसैन रिज़वी	१४९
१५.	टापलेस	एन. आर. श्याम	१५६
१६.	कितने दीनू कितने दीनानाथ	राजेश झरपुरे	१६१
१७.	कुनकुनी शाम	एलिक जेंडर	१६६
	लेख		
१८.	मुक्तिबोध और अंधेरे में	शिखा तिवारी	१७६
१९.	दिनकर के प्रबन्ध काव्यों में युगबोध	पं. कंचनलता तिवारी	१८७
२०.	अज्ञेय की रचनात्मकता में आधुनिकता बोध	श्रीमती बबिता द्विवेदी	१९६
२१.	दलित चेतना का संदर्भ और निराला	नीतू राय	२०२

कविताएँ

२२. सुरेन्द्र काले की पांच कविताएं		२०७
२३. बलभद्र की तीन कविताएं		२१३
२४. शिवकुमार पराग की लम्बी कविता		२१६
२४. बर्फ तुम पिघलो	तेज राम शर्मा	२२३
२५. एस. के. दत्ता की चार कविताएं		२२४
२६. सुदीप्त कुमार वर्मा की दो कविताएं		२२५
२७. घर लौटते हुए	अखिलेश कुमार	२२६
२८. सन्तोष कुमार तिवारी की दो कविताएं		२३१
२६. प्रदीप सिंह की दो कविताएं		२३६
३०. ओमशंकर 'असर' की चार गज़लें		२३८
३१. विनय कुमार मिश्र की चार गज़लें		२४१
३२. वीरेन्द्र हमदम की चार गज़लें		२४४
३३. ओमप्रकाश नदीम की चार गज़लें		२४७

साक्षात्कार

३४. शिवकुमार मिश्र से चन्द्रकान्त की बातचीत		२४६

समीक्षा

३५. समकालीन हिन्दी कविता का परिप्रेक्ष्य और : 'आखर अनन्त'	वन्दना मिश्र	२५२
३६. भोजपुरी कविता की प्रगतिशील धारा और 'तोहरो विहान दाव पर'	पंकज गौतम	२५६
३७. अरविन्द की कहानियों के सरोकार	अनिल सिन्हा	२६८
३८. अपने समय में हस्तक्षेप	निशान्त	२७५
३६. 'आधी रात के रंग' : आस्था और विश्वास की कविताएं और चित्र	हरियश राय	२७६
४०. प्रतिबद्ध कथाकार की किस्सागोई	मदन मोहन	२८६
४१. संस्कृति को पुनर्व्याख्यायित करने का प्रयास	गजेन्द्र नामदेव	२६२
४२. जीवन मूल्यों से संपृक्त कहानी संग्रह 'हिरणी'	विष्णुलाल गुप्त	३००
४३. युवाओं का लोकप्रिय उपन्यासकार चेतन भगत	परिमल प्रधान	३०४
४६. पाखण्ड के मायाजाल के खिलाफ	विकास मिश्र	३०८
४७. शब्द-शब्द के दंश : घाव करे गंभीर की दिशा में एक प्रयास	जयप्रकाश धूमकेतु	३११
४८. रोशनी खतरे में है	रेनू राय	३१४

रपट

५०. भारतीय किसान समस्या और समकालीन लेखन	आनन्द प्रकाश तिवारी	३१७
५१. 'चार मेहराबों वाली दालान' का लोकार्पण	राकेश	३२०
५२. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पर संगोष्ठी	नानकचन्द	३२२
५३. दलित चिन्तन और कम्युनिज्म पुस्तक का लोकार्पण	कृष्ण प्रताप सिंह	३२५
५४. रचनाकारों के सम्पर्क सूत्र		३२८

संपादकीय

''लोहा गरम है चोट करो और मोड़ लो''

भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के १५० वर्ष पूरे होने को हैं। यह वर्ष १८५७ के तमाम जाने–अनजाने शहीदों को सिद्दत से याद करने का वर्ष है। यद्यपि कि ब्रिटिश व भारतीय इतिहासकारों ने १८५७ के विद्रोह को सिर्फ गदर या सिपाही विद्रोह तक ही सीमित रखा, कार्ल मार्क्स पहले गैर भारतीय इतिहासकार हैं जिन्होंने भारत में १८५७ की जंगे आजादी को इसका सही नाम देने का साहस पूर्ण जोखिम उठाया। मार्क्स और एंजिल्स ने 'भारत का प्रथम स्वतंत्रता–संग्राम १८५७–१८५६' नामक पुस्तक लिखी। मार्क्स ने एक अन्य पुस्तक 'भारतीय इतिहास पर टिप्पणियां' में भारत के लगभग एक हजार वर्षों के इतिहास पर दृष्टिपात किया। १८५३–१८५८ तक मार्क्स ने न्यूयार्क ट्रिब्यून में भारत के संबंध में ३३ लेख लिखे।

ध्यातव्य है कि १८५७ से बहुत पहले १७७१–१७८४ तक तिलका मांझी ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दे चुके थे। १८०६ में बेल्लोर का सैनिक विद्रोह, १८०६ में लावणकोर का बेलू पंथी विद्रोह, १८११ में वाराणसी के व्यवसायियों द्वारा टैक्स का विरोध, १८१६ में भीलों का विद्रोह, १८२० में पटना से शुरू वहाबी आन्दोलन, १८३१–३२ में कोलों का संघर्ष, १८३६ में पश्चिमी घाट का कोली विद्रोह, १८५४ में सूरत की जनता द्वारा नमक पर लगाये गये टैक्स का विरोध, १८५५–५६ में विरसा मुण्डा की अगुआई में संथाल–विद्रोह जैसी घटनाएं घटित हो चुकी थीं। अर्थात् १८५७ के लगभग एक सौ वर्ष पहले से ही ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध छोटे–मोटे कारणों से ही सही जनमानस में विद्रोह की भावना पनप चुकी थी।

दूसरी ओर भारत में ईसाई मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्म के प्रचार, प्रसार तथा विस्तार का सिलसिला सत्ता व्यवस्था के संरक्षण में जोर पकड़ रहा था। हिन्दू–मुस्लिम दोनों धर्मों के लोगों में धर्मभ्रष्ट होने की चिन्ता गहराती जा रही थी जिसके चलते ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध बगावत करने की जमीन तैयार हो रही थी। तत्कालीन परिस्थितियों में अंग्रेजों ने भारतीय समाज की विसंगतियों को पहचाना और जातीयता, ऊँच–नीच, छूत–अछूत, धर्मभीरुता, अंधविश्वास जैसी कमजोरियों को अपने हित में इस्तेमाल कर हिन्दू–मुस्लिम को आपस में लड़ाने का काम किया। हजारों से अधिक रियासतों के राजे–रजवाड़ों को आपस में लड़ाने का काम भी अंग्रेजों ने खूब किया। एक रियासत के राजा को प्रश्रय व सुविधायें देकर दूसरी रियासत पर आक्रमण करा कर जीती हुई रियासत को अपने अधीन करते गये। आगे चलकर राजाओं को दी गई सुविधाएं और अधिकार सीमित किये जाने लगे। इतना ही नहीं राजाओं के उत्तराधिकार के कानून इतने कठोर बना दिये गये कि धीरे–धीरे रियासतें अंग्रेजों के अधीन होती गईं। राजाओं और महाराजाओं के भीतर असंतोष बढने लगा। राजाओं, ताल्लुकेदारों, जमींदारों और कारिन्दों